*Shodh ManthanVol. XVII Special Issue Jan.2026 ISSN: (P)0976-5255(e)2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)*
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17SI01.04

# वैश्वीकरण की प्रवृत्तियाँ (Trajectories of Globalization): एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

04

**डॉ. पंकज कुमार सिंह**
*असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)*
*महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर*
*महाविद्यालय, बिल्सी (बदायूं)*
ईमेलः *pankajsociohdi@rediffmail.com*

***सारांश (Abstract)***

*वैश्वीकरण आधुनिक विश्व की एक केन्द्रीय प्रक्रिया है, जिसने आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित किया है। यह शोधपत्र वैश्वीकरण की विभिन्न प्रवृत्तियों (trajectories) का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि वैश्वीकरण कोई एकरेखीय प्रक्रिया नहीं बल्कि बहुआयामी, असमान और ऐतिहासिक रूप से परिवर्तनीय प्रक्रिया है। शोध में वैश्वीकरण के ऐतिहासिक चरणों, प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोणों, आर्थिक–सांस्कृतिक प्रभावों तथा विकासशील देशों के संदर्भ को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है।*

***मुख्य शब्द (Keywords)***

*वैश्वीकरण, आधुनिकता, विश्व व्यवस्था, सांस्कृतिक परिवर्तन, नवउदारवाद*

## 1. प्रस्तावना (Introduction)

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वैश्वीकरण एक प्रमुख सामाजिक–आर्थिक प्रक्रिया के रूप में उभरा। सूचना प्रौद्योगिकी, अन्तरराष्ट्रीय व्यापार, पूँजी प्रवाह और संचार माध्यमों के विस्तार में विश्व को ''वैश्विक गाँव'' में परिवर्तित कर दिया। समाजशास्त्र में वैश्वीकरण को केवल आर्थिक घटना न मानकर, एक व्यापक सामाजिक परिर्वतन के रूप में देखा जाता है, जिसकी अनेक प्रवृत्तियाँ (trajectories) हैं।

## 2. वैश्वीकरण की अवधारणा (Concept of Globalization)

एंथनी गिडेन्स के अनुसार, वैश्वीकरण सामाजिक सम्बन्धों का ऐसा विस्तार है जिसमें दूरस्थ घटनाएँ स्थानीय जीवन को प्रभावित करती हैं। रोलैंड रॉबर्टसन इसे ''विश्व की संकुचन प्रक्रिया'' मानते हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से वैश्वीकरण एक सतत और गतिशील प्रक्रिया है, जो विभिन्न समाजों में अलग–अलग रूप लेती है।

## 3. वैश्वीकरण की प्रवृत्तियाँ (Trajectories of Blobalization):

### साहित्य समीक्षा

1. वैश्वीकरण पर उपलब्ध साहित्य यह दर्शाता है कि इसे आर्थिक प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि एक बहुआयामी ऐतिहासिक–सामाजिक परिवर्तन के रूप में समझा गया है। एंथनी गिडेंस वैश्वीकरण को '' दूरस्थ सामाजिक सम्बन्धों की तीव्रता'' के रूप में परिभाषित करते हैं, जहाँ स्थानीय घटनाएँ वैश्विक प्रक्रियाओं से जुड़ जाती है। इमैनुएल वालरस्टीन की विश्व–प्रणाली सिद्धांत (World-System Theory) वैश्वीकरण को पूँजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था के विस्तार के रूप में देखता है, जिसमें केन्द्र, अर्ध–परिधि और परिधि देशों के बीच असमान सम्बन्ध विकसित होते हैं। इस दृष्टिकोण से वैश्वीकरण की प्रवृत्ति असमान विकास और निर्भरता को गहराती है।

2. दूसरी ओर,सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से वैश्वीकरण की प्रवृत्तियों को होमी भाभा, रोलैंड रॉबर्टसन और अरजन अप्पादुराई जैसे विद्वानों ने विश्लेषित किया है। रॉबर्टसन 'ग्लोकेलाइजेशन' की अवधारणा प्रस्तुत करते हैं, जो यह बताती है कि वैश्विक प्रक्रियाँ स्थानीय संस्कृतियों के साथ अंतःक्रिया करती हैं, न कि उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देती है। अप्पादुराई वैश्वीकरण को विभिन्न ''स्केप्स'' (ethnoscapes, mediascapes, technoscapes आदि ) के माध्यम से समझते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण की प्रवृत्तियाँ रैखिक न होकर बहु–दिशात्मक और असमान हैं।

3. भारतीय और ग्लोबल साउथ के सन्दर्भ में वैश्वीकरण पर साहित्य अधिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाता है। आंद्रे गुंडर फ्रैंक और समीर अमीन जैसे चिंतकों ने वैश्वीकरण को नव–उपनिवेशवाद और संरचनात्मक असमानता से जोड़कर देखा है। भारतीय समाजशास्त्री यह तर्क देते है कि वैश्वीकरण ने एक ओर आर्थिक अवसर, तकनीकी विकास और उपभोक्ता संस्कृति को बढ़ावा दिया,

वहीं दूसरी ओर श्रम असुरक्षा, सांस्कृतिक असमानता और सामाजिक विभाजन को भी तीव्र किया। इस प्रकार, साहित्य यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि वैश्वीकरण की प्रवृत्तियाँ एकरूप नहीं हैं, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय संदर्भों के अनुसार विभिन्न रूपों में विकसित होती है।

## 4. वैश्वीकरण का ऐतिहासिक विकास (Historical Trajectories)

4.1 प्रारंभिक चरणः व्यापार मार्गों, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के माध्यम से प्रारंभिक वैश्विक संपर्क स्थापित हुए।

4.2 औद्योगिक युगः औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन और श्रम को वैश्विक स्तर पर संगठित किया।

4.3 उत्तर–औद्योगिक और डिजिटल युगः सूचना क्रांति, इंटरनेट और बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने वैश्वीकरण को नई गति दी।

## 5. वैश्वीकरण की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (Major Trajectories of Globalization)

5.1 आर्थिक वैश्वीकरणः इसमें मुक्त बाजार, निजीकरण, उदारीकरण और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका प्रमुख है। नवउदारवादी नीतियों ने विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं को गहराई से प्रभावित किया।

5.2 राजनीजिक वैश्वीकरणः अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ जैसे संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और IMF राष्ट्रीय संप्रभुत को पुर्नपरिभाषित करती है।

5.3 सांस्कृतिक वैश्वीकरणः पश्चिमी संस्कृति, उपभोक्तावाद और मीडिया के माध्यम से सांस्कृतिक समरूपता के साथ–साथ ''स्थानीयकरण'' (Glocalization) भी उभरता है।

5.4 सामाजिक वैश्वीकरणः प्रवास, श्रम बाजार का अंतरराष्ट्रीयकरण और वैश्विक नागरिकता की अवधारण सामाजिक संरचनाओं को बदल रही है।

## 6. सैद्धांतिक दृष्टिकोण (Theoretical Perspectives)

6.1 विश्व–प्रणाली सिद्धांत (World System Theory) इमैनुएल वालरस्टीन के अनुसार, वैश्वीकरण पूंजीवादी विश्व व्यवस्था का विस्तार है, जिसमें केंन्द्र अर्ध–परिधि और परिधि देश शामिल हैं।

6.2 आधुनिकीकरण सिद्धांत–यह वैश्वीकरण को विकास और प्रगति की प्रक्रिया मानता है, किन्तु इसकी आलोचना असमानता को नजरअंदाज करने के लिए की जाती है।

6.3 उत्तर–औपनिवेशिक दृष्टिकोण–यह दृष्टिकोण वैश्वीकरण को नए प्रकार के प्रभुत्व और सांस्कृतिक वर्चस्व के रूप में देखता है।

## 7. वैश्वीकरण की आलोचनाएँ (Critiques of Globalization)

वैश्वीकरण पर असमान विकास, सांस्कृतिक क्षरण, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक विषमता बढ़ाने के आरोप लगाए जाते है। कई विद्वान इसे ''नव–साम्राज्यवाद'' का रूप मानते हैं।

## 8. निष्कर्ष (Conclusion)

यह स्पष्ट है कि वैश्वीकरण की प्रवृत्तियाँ बहुआयामी और विविध है। यह न तो पूर्णतः लाभकारी है और न ही पूर्णतः हानिकारक। इसकी समझ के लिए संदर्भो, ऐतिहासिक अनुभवों और शक्ति संबंधां का विश्लेषण आवश्यक है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से, वैश्वीकरण एक सतत परिवर्तनशील प्रक्रिया है, जिसे एकरेखीय ढंग से नहीं समझा जा सकता।

## संदर्भ (References)

1. Giddens, A. (1990). The Consequences of Modernity. Cambridge: Polity Press.
2. Robertson, R. (1992). Globalization: Social Theory and Global Culture. London: Sage.
3. Wallerstein, I. (2004). World-System Analysis. Durham: Duke University Press.
4. Appadurai, A. (1996). Modernity of Large. Minneapolis: University of Minnesota Press.
5. Held, D., et al. (1999). Global Transformation. Stanford: Stanford University Press.
6. Steger, M. (2017). Globalization: A Very Short Introduction. Oxford: Oxford University Press.